ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)-८४८ १२५

बुलेटिन संख्या-६०
दिनांक-मंगलवार,३० जुलाई,२०१९

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः ३१.८ एवं २६.५ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ९० सुबह में एवं दोपहर में ६५ प्रतिशत, हवा की औसत गति १०.५ कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण ३.५ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन ५.८ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में २९.६ एवं दोपहर में ३१.० डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में पूसा मौसमीय वेद्यशाला में १४.४ मि०मी० वर्षा रिकार्ड हुई।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(३१ जुलाई-४ अगस्त,२०१९)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी ३१ जुलाई-४ अगस्त,२०१९,२०१९ तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-

- पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में मध्यम बादल छाये रहने का अनुमान है। अगले ३-४ दिन वर्षा की सक्रियता में कमी रह सकती है। इस दौरान तराई एवं मैदानी जिलों में कहीं-कहीं छिट-पूट वर्षा हो सकती है।
- अधिकतम तापमान ३२ से ३४ डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान २५ से २७ डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- औसतन १० से १५ कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से पुरवा हवा चलने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में ८५ से ९० प्रतिशत तथा दोपहर में ७० से ७५ प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- धान की रोपाई कृषक बंधु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दें।
- उचॅास जमीन में अरहर की बुआई यथाशीघ्र समाप्त कर लें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर २० किलो नेत्रजन, ४५ किलो स्फुर एवं २० किलो पोटाश तथा २० किलो सल्फर का व्यवहार करें। बहार, पूसा ९, नरेद्र अरहर १, मालवीय-१३, राजेन्द्र अरहर-१ आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित है। बुआई के २४ घंटे पूर्व २.५ ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी ६० से०मी० रखें । बीज दर १८ से २० किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
- खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में १५०-२०० क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद, ६० किलोग्राम नेत्रजन, ८० किलोग्राम स्फुर एवं ८० किलोग्राम पोटाश के साथ २० किलोगाम सल्फर का व्यवहार करें। प्याज के पौध की रोपाई के लिए खेतो को समतल कर छोटी-छोटी उथली क्यारियाँ बनावें, जिसकी चौड़ाई २ मीटर एवं लम्बाई ३ से ५ मीटर तक रख सकते हैं। प्रत्येक दो क्यारियो के बीच जल निकास हेतु नालियाँ अवश्य बनावें। जिन किसान भाई का प्याज का पौध ४५-५० दिनों का हो गया हो वे पाँक्ति से पाँक्ति की दुरी १५ से०मी०, पौध से पौध की दुरी १० से०मी० पर रोपाई करें। पिछात बोयी गई प्याज की पौधशाला में नियमित रूप से कीट एवं रोग-व्याधि की निगरानी करतें रहें। स्वस्थ एवं सुडौल पौध के लिए पौधशाला से खरपतवार को निकालते रहें।
- मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद *पंत मिर्च-३, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल* तथा संकर किस्में *अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी०एस०एस०-२६७* अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम ७५ प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
- खरीफ मक्का की फसल में कीट-व्याधियों एवं फफूंदी धब्बों की निगरानी करतें रहें। कीट अथवा रोग की उपस्थिती में उपचार हेतु अनुशंसित दवा का छिड़काव करे।
- आम के पौधों की उम्र (१० वर्ष से अधिक) के अनुसार फलन समाप्त होने के बाद अनुशंसित उर्वरको जैसे १५-२० किलोग्राम सड़ी गोबर की खाद, १.२५ किलोग्राम नेत्रजन, ३००-४०० ग्राम फॉसफोरस,१.० किलोग्राम पोटाश, ५० ग्राम बोरेक्स तथा १५-२० ग्राम थाइमेट प्रति पौधा प्रति वर्ष के अनुसार उपयोग करें। जिससे अगले वर्ष पौधे फलन में आ सकें तथा उनका श्वास्थ अच्छा बना रहें।
- आम का साटा तथा लीची, अमरूद एवं नींबू की गूटी तैयार करें। फलदार एवं वानिकी पौधो को लगाने का यह समय उपयुक्त चल रहा है। किसान भाई अपनी पसंद के अनुसार फलदार पौधें का बगाान जैसे- *आम, लीची, कटहल, ऑवला, अमरुद, शरीफा, नींबु* की रोपनी करें। वानिकी पौधो जैसे- *सागवान, चह, हरा सेमल, देशी सेमल, सफेद सिरीस, काला सिरीस, अर्जुन, गम्हार, गुलमोहर* की रोपनी करें।
- पिछले माह बोयी गई साग-सब्जियों की निकाई-गुराई करें। सब्जियों की नर्सरी में लाही, सफेद मक्खी व चूसक कीड़ों की निगरानी करें। ये कीट विषाणु जनित रोग फैलाते है। इन कीट का प्रकोप दिखाई देने पर बचाव के लिए इमिडाक्लोरोप्रिड दवा का ०.३ मी.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर आसमान साफ रहने पर छिड़काव करें।
- वर्षा ऋतु में उमस एवं जलजमाव के कारण बिमारियों जैसे गलघोटु, लंगड़ी बुखार, सर्रा बबेसियोसिस, पी०पी०आर०, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी में भिगें चारा या दाना नहीं दें। पशुओं के पैरों को पोटाशियम परमेंगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओं को अत्यधिक चारा दाना नहीं दें अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है।
- गाभीन गाय-भैंसो को खनिज मिश्रण ५० ग्राम प्रतिदिन दें। पशुओं को खुले हवादार एवं सुखे स्थानों में रखें। साफ ठंढ़ा पानी पुरे समय उपलब्ध करावें। सर्पदंश से वचने के लिए वाड़े (पशु गृह) में रोशनी की समुचित व्यवस्था करें। पशुओ के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे।

आज का अधिकतम तापमानः ३२.० डिग्री सेल्सियस, सामान्य के बराबर	आज का न्यूनतम तापमानः २५.५ डिग्री सेल्सियस, सामान्य के बराबर

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी